खण्ड - अ

माध्यम - हिंदी

प्र. क्र.

1 (A) → (i) स्थापना - 1876 में सुरेंद्रनाथ बनर्जी एवं आनंद मोहन बोस द्वारा

(ii) कांग्रेस की पूर्वगामी संस्था

(iii) उद्देश्य - संयुक्त भारत की अवधारणा पर जनमत तैयार करना

(B) (i) प्रथम गवर्नर जनरल विलियम बैंटिक के बाद गवर्नर जनरल।

(ii) कार्यकाल - 1835-36

(iii) समाचार पत्रों पर लगे प्रतिबंधों को हटाने के कारण प्रेस का मुक्तिदाता।

(C) महादेव देसाई भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के प्रमुख सेनानी व राष्ट्रवादी लेखक रहे हैं। ये महात्मा गाँधी के निजी सचिव भी रहे।
प्रमुख पुस्तक: The Story of Bardoli

(D) → अल्फांसो दी अल्बुकर्क के बाद आया पुर्तगाली गवर्नर
→ कोचीन से राजधानी स्थानांतरित करके गोवा को बनाया
→ इसने पुर्तगाली कंपनी का विस्तार पूर्वी क्षेत्र जैसे हुगली, मद्रास में किया।

(E)

(F) → अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल में गुलाम जनरल एवं कमाण्डर रहे मलिक काफूर को गुजरात अभियान के दौरान प्राप्त किया गया। इसने दक्षिण के अभियानों जैसे - देवगिरि, होयसल, वारंगल आदि में सेना का नेतृत्व संभाला।

(G) → बाबर व अफगानों के मध्य लड़ा गया।

→ नेतृत्व → मुगल - बाबर → विजयी
→ अफगान - महमूद लोदी

→ समय - 1529 ई.

(H) प्रथम विश्वयुद्ध के बाद 1920 में अस्तित्व में आयी नाजी पार्टी जर्मन की प्रमुख राजनीतिक पार्टी थी। इसका नेतृत्व हिटलर ने संभाला। इसके सिद्धांत उग्रराष्ट्रवाद, नस्लवाद एवं साम्यवाद विरोधी आदि थे।

(I) → समय - 1565 ई.

→ तालीकोटा का युद्ध → मध्य → रामराय (विजयनगर साम्राज्य)
→ दक्कन के 5 मुस्लिम सुल्तान (बीजापुर, बीदर, बरार, अहमदनगर, गोलकुंडा)

→ विजयनगर पराजित हुआ

(J) जैन-उल-आब्दीन कश्मीर के महान शासकों में जाने जाते हैं।
कार्य - बाजार नियंत्रण नीति एवं उद्योगों को बढ़ावा

— धार्मिक सहिष्णुता को प्रोत्साहन
— प्रशासनिक व आर्थिक सुधार

(K) → चंदेल शासक परिमल (परमर्दीदेव) के राजदरबार में प्रमुख वीर योद्धा।
→ जगनिक द्वारा इनके सम्मान में आल्हाखंड की रचना की गयी है।
→ सम्बंधित स्थान - महोबा

(L) गुर्जर प्रतिहार शासक राज्यपाल के समय 1018 में महमूद गजनवी ने भारत पर आक्रमण किया।

(M) सूर्यसेन → प्रमुख क्रांतिकारी
→ बंगाल में
→ 1930 के सविनय अवज्ञा आंदोलन के समय चट्टगाँव शस्त्रागार पर नियंत्रण किया।

(N) यह इंग्लैंड की रक्तहीन क्रांति के पश्चात् स्वीकार किया गया संवैधानिक कानून बिल के तहत प्रमुख सिविल अधिकारों को मान्यता दी गयी एवं संसद की सर्वोच्चता को स्वीकार किया गया।

(O)

2 (B)

8 अगस्त 1942 को महात्मा गाँधी के नेतृत्व में प्रारंभ किया गया भारत छोड़ो आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष की प्रमुख घटना है, जिसमें 'करो या मरो' की भावना के साथ सत्याग्रह, बहिष्कार, जुलूस, धरना, निष्क्रिय प्रतिरोध आदि के माध्यम से अंग्रेजी शासन को व्यापक चुनौती दी गयी।

इसके महत्व को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है।

1) इसमें अनेक समानांतर सरकारें गठित की गयीं, (जैसे सतीश सावंत के द्वारा मिरनापुर में, सतारा में नानापाटिल द्वारा) जिससे जनता में आत्मविश्वास बढ़ा

2) जनता ने अपना नेतृत्व स्वयं संभाला जो परिपक्व आंदोलन को दर्शाता है।

3) 1857 के पहली बार सर्वव्यापक विस्तार के साथ व्यापक जनभागीदारी रही, जिससे विश्व जनमत भारतीय आजादी के पक्ष में आया।

4) ब्रिटिश शासन को यह समझ आ गया कि ताकत के माध्यम से भारत पर सत्ता नहीं चलायी जा सकती।

भले ही इस आंदोलन का दमन कर दिया गया हो लेकिन भारतीय स्वतंत्रता की दिशा में इसने प्रमुख भूमिका निभायी। यही नहीं चीन, अमेरिका

जैसे देश भारतीय स्वतंत्रता के समर्थक बन गए।

2(c) →

भारतीय स्वतंत्रता का प्रथम संघर्ष मानी जाने वाली 1857 की क्रांति अनेक प्रशासनिक - राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक कारणों का परिणाम थी जिसमें प्रमुख व तात्कालिक कारण सैन्य परिस्थितियाँ थीं। इसे निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है :

1). - भारतीय सैनिकों के साथ होने वाला भेदभाव व अपमान।

2). उच्च पदों पर भारतीयों की नियुक्ति नहीं।

3) वेतन - भत्ते व सुविधाओं में भेदभाव

4). धार्मिक आस्थाओं पर चोट जैसे - धार्मिक चिह्न (तिलक, चोटी, जनेऊ, पगड़ी) आदि पर प्रतिबंध

5) समुद्र पार युद्ध के लिए भेजना जिससे धार्मिक रूप से ग़लत माना जाता था।

6) भारतीय आम जनमानस का शोषण का प्रभाव भी सैनिकों में असंतोष का कारण था।

7) तात्कालिक कारण — ब्रिटिश कंपनी द्वारा चर्बी वाले कारतूस प्रयोग वाली रायफल जिसमें गाय व सुअर की चर्बी के कारतूस प्रयुक्त होते थे। इससे सैनिकों की धार्मिक आस्थाओं

पर चोट पहुँची।

उपरोक्त कारणों के सम्मिलित प्रभाव से उत्पन्न असंतोष का परिणाम 1857 की क्रांति में परिलक्षित हुआ ~~जबकि~~ जो बैरकपुर छावनी (मंगलपांडे) से प्रारंभ होकर क्रांति बन गया।

2 (1) →

मौर्य वंश का संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने मुख्य प्रधान कौटिल्य की सहायता से नंद वंश को समाप्त करके मौर्य वंश की नींव डाली। 32 वर्ष में राजभार संभालते हुये इसने अनेक राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, व प्रशासनिक कार्य किए :

(1) राजनीतिक उपलब्धियाँ
- विशाल मगध साम्राज्य की स्थापना
- ईरान से लेकर बंगाल तक साम्राज्य विस्तार
- एकीकृत शासन

(2) आर्थिक सुधार
- सिंचाई व्यवस्था का विकास
- पुष्यभूति द्वारा सुदर्शन झील का निर्माण
- कृषि, उद्योग व व्यापार को प्रोत्साहन
- कर प्रणाली में सुधार
- मुद्रा व्यवस्था का विकास

(3) प्रशासनिक सुधार
- केंद्रीय, प्रांतीय एवं ग्राम व नगर स्तर पर पृथक प्रशासनिक व्यवस्था का निर्माण
- सर्वोच्च अधिकारी व विभागों के अध्यक्षों की नियुक्ति
- सत्ता का विकेंद्रीकरण
- व्यवस्थित कर प्रणाली व गुप्तचर प्रणाली का विकास

(4) सामाजिक
- प्रशासन में महिलाओं की भूमिका (अंगरक्षिका की नियुक्ति)
- महिलों को शिक्षा अधिकार के प्रयास
- विधवा विवाह को अनुमति
- प्राकृतिक आपदाओं के समय राहत व्यवस्था (जानकारी - सौहगौरा व महास्थान अभिलेख से)

वस्तुतः मौर्य शासक चंद्रगुप्त ने दैवीय पद का दावा नहीं किया बल्कि प्रजा के हित को प्रमुखता देते हुये कल्याणकारी राज्य की स्थापना की। साथ ही कौटिल्य की मदद से किए गए राजनीतिक-प्रशासनिक सुधार कालांतर में आधारशिला सिद्ध हुए।

2(E) → भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के इतिहास में 1824 में लड़ा गया कुंवर चैनसिंह का विद्रोह उल्लेखनीय है।

वस्तुतः नरसिंहगढ़ रियासत के राजकुमार चैनसिंह ने आनंदपाल एवं रामपाल को गद्दारी के दंडस्वरूप मृत्युदंड दे दिया, जिससे ब्रिटिश कंपनी शासन को चुनौती मिली।

फलतः सीहोर के ब्रिटिश पोलिटिकल एजेंट मैडाक ने चैनसिंह के समक्ष अंग्रेजी शासन की अधीनता जैसी अपमान जनक शर्तें रखीं जिसका मुखर विरोध कुंवर चैनसिंह ने किया।

चैनसिंह ने अपमान सहन की अपेक्षा संघर्ष उचित समझा और 1824 में सीहोर के तहसील चौराहे पर मेडाक व कुँवर चैनसिंह की सेनाओं के मध्य युद्ध हुआ।

इसमें कुंवर चैनसिंह, हिम्मतखां व बहादुर खाँ एवं इनके सहयोगी सैनिक वीरता पूर्वक शहीद हो गये। इनकी छतरी व कब्रें आज भी वीरता का गुणगान करती हैं, जिसमें अधीनता और अपमान की जगह आजादी और स्वाभिमान को महत्व दिया गया।

2(ब) झंडा किसी भी देश की संप्रभुता, अखंडता और गौरव का प्रतीक होता है। झंडा सत्याग्रह इसी गौरव की भावना को दर्शाने वाली प्रसंग है।

दरअसल कांग्रेस की असहयोग आंदोलन की मानसिक तैयारी की बॉम्ब समिति के जबलपुर आने पर जबलपुर कांग्रेस समिति द्वारा अभिनंदन पत्र व नगरपालिका भवन पर झंडा फहराया गया।

इसे जबलपुर के डिप्टीकमिश्नर ने अंग्रेजी हुकूमत का अपमान समझा और झंडे को उतारने व पैरों से कुचलने का आदेश दिया।

इसी क्रम में 1923 ई. में झंडा सत्याग्रह शुरू हुआ जिसमें ~~सरोजनी~~ पं. सुंदरलाल, सुभद्रा कुमारी, प्रेमचंद आदि नेतृत्वकर्ता शामिल रहे। पंसुंदरलाल पर न्यायिक मुकदमा चला और 6 माह का कारावास हुआ।

1923 में जबलपुर से प्रारंभ हुआ यह सत्याग्रह न केवल जबलपुर तक सीमित रहा बल्कि नागपुर सहित व्यापक क्षेत्र में फैला।

2 (H) →

चरणपादुका नरसंहार

- मध्यप्रदेश का जलियाँ वाला बाग हत्याकांड
  - ↓ बिना चेतावनी के नौगांव के पोलिटिकल एजेंट (अंग्रेज) द्वारा भीड पर गोलीबारी
- 14 जनवरी 1931 को मकर संक्राति के दिन
- उर्मिल नदी के किनारे छतरपुर में चरणपादुका स्थानपर
- हलके कुर्मी, सुन्दरलाल आदि शहीद

2 (J) → बाबर के पश्चात् मुगल शासन का दूसरा शासक हुमायूँ को एक असंगठित व कमजोर शासन प्राप्त हुआ। इससे हुमायूँ के साम्राज्य की अनेक चुनौतियाँ सामने आयीं जो उसकी असफलता का कारण बनीं।

कारण

1. अफगानों से संघर्ष
2. कूटनीतिक कुशलता व योग्यता का अभाव
3. भाइयों (कामरान, हिंदाल) से संघर्ष
4. असंगठित व कमजोर शासन व्यवस्था
5. अयोग्य सैन्य संचालन

उपरोक्त कारण हुमायूँ की असफलता के कारण बने और अंततः चौसा के युद्ध के साथ शेरशाह सूरी का शासन स्थापित हुआ।

2(K) → सातवाहन शासक गौतमीपुत्र शातकर्णी एक योग्य व महान शासक माना जाता है, जिसे अद्वितीय ब्राह्मण, क्षत्रियदर्पमान मर्दन, द्वितीय परशुराम कहा जाता है। इसके साम्राज्य की उपलब्धियाँ निम्नलिखित हैं :-

① उत्तर से लेकर दक्षिण तक साम्राज्य विस्तार। (विंध्यराज)

② जनता के कल्याण पर बल। इसे प्रजा के सुख में सुखी व प्रजा के दुख में दुखी शासक माना जाता है।

③ धार्मिक सहिष्णुता पर बल।

④ बौद्ध भिक्षुओं को दान आदि।

2(L) 1789 की फ्रांस की क्रांति में अनेक सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक परिस्थितियाँ कारण बनीं किंतु सर्वप्रमुख योगदान दार्शनिकों व बुद्धजीवियों का रहा जिन्होंने फ्रांसीसी समाज की समस्याओं का आइना सामने रखा।

रूसो ने प्रकृति पर बल देते हुये कहा कि "मनुष्य स्वतंत्र पैदा हुआ है"। साथ ही

रूसो ने समानता पर बल देते हुए कहा कि "प्रकृति पर सभी का समान अधिकार है।"

वहीं वाल्टेयर ने शक्ति के पृथक्करण की व्याख्या करते हुए मानवाधिकारों की बात की। मांटेस्क्यू ने भी जनता के शोषण व चर्च व्यवस्था की तर्कपूर्ण ढंग से आलोचना की जिससे फ्रांसीसी क्रांति को प्रेरणा मिली।

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि फ्रांसीसी क्रांति का मूल फ्रांस की शोषक परिस्थितियाँ (चर्च व्यवस्था, दैवीय शासन, वर्ग शोषण) थीं किंतु इन्हें उजागर करके दार्शनिकों ने क्रांति को प्रेरित किया।

3(A) → 1914 में प्रारंभ हुआ प्रथम विश्व युद्ध विश्व इतिहास की एक सर्वप्रमुख घटना है, जिसके लिए अनेक कारण जैसे- औपनिवेशिक व साम्राज्यवादी प्रतिस्पर्धा, सैन्यीकरण, गुटीय राजनीति आदि; जिम्मेदार रहे।

(1) साम्राज्यवादी प्रतिस्पर्धा: यूरोप में औद्योगिक क्रांति के बाद शुरू हुयी साम्राज्यवादी एवं औपनिवेशिक लाभ की प्रतिस्पर्धा ने यूरोपीय देशों जैसे- इंग्लैंड, फ्रांस, रूस व नवोदित देश- आस्ट्रिया, इटली, जर्मनी आदि में

आपसी तनाव को बढ़ाया।

② कूटनीतिक संधि प्रणाली : सेडान के युद्ध के बाद जहाँ जर्मनी फ्रांस को अलग-थलग करना चाहता था जिससे एल्सेस-लोरैंस पर जर्मनी का अधिकार बना रहे। वहीं बोस्निया-हर्जेगोविना को लेकर आस्ट्रिया-सर्बिया संघर्ष बढ़ा। इससे देशों में गुप्त संधियाँ हुयीं और विभिन्न त्रिगुट निर्मित हुये जिससे गुटीय राजनीति शुरू हुयी।

③ सैन्यीकरण → यूरोपीय देशों ने अनिवार्य सैनिक सेवा लागू कर शस्त्रीकरण को बढ़ावा दिया जिससे आपसी तनाव युद्ध में बदल गया।

④ उग्रराष्ट्रवाद → एल्सेस-लोरैंस एक तरफ जर्मनी की सप्रभुता का मुद्दा बना, वहीं फ्रांस द्वारा इसे पाना उसके सम्मान का प्रश्न बना। इससे दोनों के मध्य उग्रराष्ट्रवाद का जन्म हुआ। वहीं सर्बिया-आस्ट्रिया के बीच अन्य यूरोपीय ताकतों के समर्थन के चलते उग्रराष्ट्रवाद युद्ध में बदल गया।

⑤ अंतर्राष्ट्रीय संस्था का अभाव → यह युद्ध का प्रमुख कारण बना। वस्तुतः सभी देश स्वयं को असीमित व सर्वोच्च शक्तिशाली

समझ रहे थे। इनमें आपसी समन्वय, व नियंत्रण व शांति व्यवस्था को बनाए रखने के लिए किसी एकल अंतर्राष्ट्रीय संस्था की कमी थी जो इन्हें नियंत्रित कर सके।

(6) तात्कालिक कारण — बोस्निया - हर्जेगोविना, जिसमें सर्ब जाति की संख्या अधिक थी किंतु इस पर नियंत्रण आस्ट्रिया का था। अतः सर्बिया बोस्निया पर अपना दावा करता था। ऐसे में बोस्निया घूमने आये आस्ट्रिया के राजकुमार की हत्या सर्ब युवक ने कर दी जिससे सर्बिया और आस्ट्रिया के मध्य 1914 में युद्ध हो गया जो आगे चलकर विश्व युद्ध में बदल गया।

वस्तुतः प्रथम विश्व युद्ध में सर्बिया और ऑस्ट्रिया तो दो घोड़े थे किंतु घुड़सवार तो कोई और थे जिससे दो देशों का युद्ध प्रथम विश्व युद्ध में बदल गया जिसमें एक ओर इंग्लैंड, फ्रांस, रूस तो दूसरी ओर आस्ट्रिया, जर्मनी, इटली, तुर्की आदि थे। यह युद्ध 1918 में पेरिस सम्मेलन में अपने नुकसानों का मूल्यांकन करता है।

3(B) → भारतीय इतिहास की प्रथम नगरीकृत सभ्यता सिंधु घाटी सभ्यता (1750 ई.पू. - 2350 ई.पू.) अपने समकालीन सभ्यताओं में समृद्ध थी जिसके पतन के सम्बंध में अलग - अलग विद्वानों के अनेक मत हैं।

① आर्य आक्रमण व बाह्य कारक - गार्डनर-चाइल्ड व अन्य
② बाढ़ - जॉन मार्शल
③ जलवायु परिवर्तन व पारिस्थिति बदलाव
④ प्राकृतिक आपदाएँ जैसे- अकाल, महामारी आदि

इस सभ्यता के पतन के सम्बंध में आर्य आक्रमण का सिद्धांत ज्यादा तार्किक नहीं है क्योंकि आर्यों का आगमन 1500 ई.पू. माना जाता है, वहीं पतन 1750 ई. पू.।

इसके पतन का सर्वप्रमुख कारण जलवायु परिवर्तन; व पारिस्थितिकीय असंतुलन माना जाता है। दरअसल सिंधु निवासियों ने विकास के क्रम में पारिस्थितिकीय असंतुलन को बढ़ावा दिया जिससे बाढ़ - सूखा जैसी समस्याएँ सामने आयी और सिंधु सभ्यता अपने नगरीय स्वरूप से ग्रामीण चरण में चली गयी।

इसके अवशेषों पर अनेक स्थानीय संस्कृतियों का विकास हुआ।

3 (D) → राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने दक्षिण अफ्रीका में अपने प्रवास के दौरान व भारतीय राष्ट्रीय संघर्ष के समय अपने आंदोलनों व जैसे - चंपारण, खेड़ा सत्याग्रह, असहयोग आंदोलन (1920), सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930) व भारतछोड़ो आंदोलन (1942) में जिस रणनीति व कार्यपद्धति को अपनाया इसे निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है।—

① **सत्याग्रह** → इससे आशय भौतिक शक्ति को नैतिक शक्ति के माध्यम से पराजित करना है। वस्तुतः गांधी जी सत्य, अहिंसा के माध्यम से अंग्रेजी शासन को पराजित करने का माध्यम सत्याग्रह अपनाते थे।

② **संघर्ष - विराम - संघर्ष की नीति** → महात्मा गांधी के अनुसार संघर्ष करके अपनी मांगों को मनवाना चाहिए और फिर बाकी शेष मांगे पुनः संघर्ष करके। इसे दबाव - समझौता - दबाव नीति भी कहते है।

③ **आंदोलन के सक्रिय - निष्क्रिय दौर में विश्वास** → वस्तुतः जनता के दमन सहने की क्षमता असीमित नहीं होती अतः जनता को निराशा से बचाने के लिए आंदोलन को दमन से पहले वापस लेना चाहिए। एवं निष्क्रिय दौर में रचनात्मक कार्य

जैसे - चरखा चलाना, दहेज उन्मूलन आदि करने चाहिए।

④ साधन-साध्य की पवित्रता → गांधी नियंत्रित जनांदोलन पर बल देते थे और इसके लिए अहिंसक साधन की पवित्रता को बढ़ावा देते थे क्योंकि हिंसक आंदोलन में जनभागीदारी कम होती है, वहीं सरकार को दमन करने का मौका मिलता है।

⑤ साधारण जीवनशैली एवं रचनात्मक कार्य → यह गांधी जी की प्रमुख कार्यपद्धति थे। वे साधारण पहनावे व परिवहन का प्रयोग करते थे जिससे जनता उन्हें अपना वास्तविक प्रतिनिधि मानती थी। वहीं रचनात्मक कार्यों जैसे - स्वदेशी पर बल, चरखा चलाना, दहेज प्रथा उन्मूलन, अछूतोद्धार, वर्गसमन्वय आदि कार्य जनता में ऊर्जा के संचार के लिए करते थे।

निष्कर्षतः उपरोक्त कार्यपद्धति के चलते भारतीय जनमानस ने स्वाभाविक व सहज रूप से अपना नेतृत्व महात्मा गांधी को सौंप दिया और और उनके आंदोलनों में 1917 से लेकर 1942 तक लगातार जनभागीदारी बढ़ती गयी।